(1)

Lecture NO:- 47.

Online Class
Date - 19/8/2020
Time - 10:50 to 11:40 A.M

Dr. Surita Kumari
Depart. of Philosophy
B.A Part II Paper IV(7+)
A.N.D. College Shahpur Patory, Samastipur

TOPIC

(1) Categorical Proposition.

Ans :-

कर्म का आधार द्रव्य है। " कर्म वह गतिशील व्यापार है। जिसके फलस्वरूप द्रव्यों का स्थान परिवर्तन होता है। " जिस प्रकार गुण द्रव्य में पाये जाते हैं ठीक उसी प्रकार कर्म भी द्रव्य में ही रहते हैं। कर्म का निवास सर्वव्यापी द्रव्यों का निष्क्रिय रूप है। कर्म निर्गुण है गुण द्रव्य में ही आश्रित रहता है। कर्म में नहीं कर्म के द्वारा एक द्रव्य का दूसरे द्रव्यों में संयोग भी होता है। कर्म को इसलिए संयोग और विभाग का साक्षात् कारण माना जाता है। उदाहरणस्वरूप - गेंद को ऊपर फेंक जाने पर छत से संयुक्त होना कर्म के (द्वारा) व्यापार के द्वारा ही होता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

कर्म क्षणिक होता है।
गुण संयोग और वियोग का कारण नहीं होता है, परन्तु कर्म संयोग और (विभाग) वियोग का कारण नहीं होता है। परन्तु कर्म संयोग और वियोग का कारण है।
गुण संयोग और वियोग का कारण नहीं होता है। परन्तु कर्म संयोग और वियोग का कारण है।
गुण संयोग वियोग का कारण नहीं होता है। परन्तु कर्म संयोग और वियोग का कारण है।

इन विभिन्नताओं के बावजूद दोनों में यह साहश्य है कि वे द्रव्य में निवास करते हैं।

कर्म और गुण की कल्पना द्रव्य के अभाव में नहीं की जा सकती। कर्म की अनेक विशेषताएँ

P.T.O.

दृष्टिगत होती है।

कर्म की पहली विशेषता यह है कि यह क्षणिक होता है। यह कुछ ही काल तक जीवित रहता है। गेंद को छत से नीचे की ओर फेंकने में कर्म होता है। परन्तु यह कर्म चन्द क्षणों तक ही कायम रहता है। कर्म की यह विशेषता उसे गुण बना देती है। गुण स्थाई होता है।

उदाहरणस्वरूप :→ गेंद का रंग, जो गुण स्थायी होता है। यह तब तक कायम रहता है जबतक गेंद की सत्ता बनी रहती है। दूसरी विशेषता कर्म की यह है कि यह द्रव्यों में नहीं पाया जाता है। उदाहरण स्वरूप अपरिमित द्रव्य जैसे आकाश, काल, आत्मा, मन कर्म से रहित हैं।

END